

भारत की शिक्षा प्रणाली का एक शैक्षणिक अध्ययन

डॉ० डिल्लीपत सहा० प्रोफेसर

मोतीवाई राजाराम महाविद्यालय गरौठा (झाँसी)

सारांश, भारतीय शिक्षा में, एक छात्र के अंक उसके परिणाम को परिभाषित करते हैं, न कि कौशल को। भारतीय शिक्षा प्रणाली छात्र द्वारा अर्जित अंकों पर अधिक केंद्रित है, बजाय इसके कि उसने जो कौशल या योग्यता विकसित की है, उसे महत्व दिया जाए। छात्र को प्रशिक्षित करने और दीर्घकालिक ज्ञान प्रदान करने के बजाय, शिक्षा प्रणाली छात्र की अवधारण और रटने की क्षमता पर केंद्रित है। यहाँ तक कि परीक्षाएँ भी उसी मूल्य पर आधारित हैं। स्कूलों और उच्च शिक्षण संस्थानों का पाठ्यक्रम भी छात्र के सर्वांगीण और कौशल विकास के बजाय एक परीक्षा पास करने और नौकरी पाने पर आधारित है। सीखना गौण है। यह शोध पत्र इस बात पर केंद्रित है कि कैसे भारतीय शिक्षा प्रणाली कौशल विकास और योग्यता बनाने के बजाय अंकों और सीखने पर बहुत अधिक निर्भर है।

मुख्य शब्द, योग्यता, अवधारण शक्तियाँ, रटना सीखना, XXI वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही आदि।

परिचय, शिक्षा व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने या प्राप्त करने की प्रक्रिया है। यह स्कूल या कॉलेज तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा किसी भी स्रोत के माध्यम से कौशल और ज्ञान में वृद्धि है। भारत न केवल संस्कृति और इतिहास में समृद्ध है, बल्कि इसका शैक्षणिक इतिहास भी समृद्ध है। प्राचीन भारत में, अधिकांश शिक्षा प्रणाली हिंदू धर्म से प्रभावित थी, जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता था। प्राचीन काल में कोई औपचारिक शिक्षा प्रणाली नहीं थी। कुछ वर्षों बाद वैदिक प्रणाली आई जो वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के इर्द-गिर्द घूमती थी। समाज या प्रशासन का कोई अधिकार नहीं था और वे शिक्षा प्रणालियों में हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे। छात्रों को अपने घर छोड़कर गुरुकुल में अपने गुरु (शिक्षक) के साथ अध्ययन की पूरी अवधि के लिए रहना होता था। ये गुरुकुल प्रत्येक व्यक्ति के कौशल और क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करते थे, उन्हें पूरी तरह से बढ़ाते थे। गुरुकुल छात्रों को जीवन जीने की कला सीखने में भी मदद करते थे, जो गणित और विज्ञान से कहीं अधिक आवश्यक है। वाद-विवाद, चर्चा और कौशल विकास प्राचीन शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख हिस्सा थे। समूहों में पढ़ाना एक सामान्य अभ्यास था लेकिन छात्रों को उनकी क्षमताओं और योग्यता के आधार पर व्यक्तिगत रूप से भी पढ़ाया जाता था। मौखिक वाचन ज्ञान प्रदान करने का मूल माध्यम था और इसे आत्मनिरीक्षण (सुनना, चिंतन और एकाग्र मनन), कहानी सुनाना, याद करना, आलोचनात्मक विश्लेषण, व्यावहारिक अध्ययन और सेमिनार जैसे विभिन्न तरीकों से अभ्यास किया जाता था। पहले की शिक्षा में विश्लेषणात्मक उपयोग और मूल्य-प्रत्यारोपण अधिक देखा जाता था। आजकल की आधुनिक शिक्षा रटने और लिखित परीक्षाओं में सब कुछ लिखने पर आधारित है। रटने से अंक प्राप्त करने पर ध्यान दिया जाता है, न कि समझने पर। शिक्षा प्रणाली अब केवल अच्छे अंक और नौकरी पाने का साधन बन गई है, जबकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य कौशल और व्यक्तित्व विकास होना चाहिए। उच्च अंक प्राप्त करने के लिए, छात्र आमतौर पर चीजों को याद करते हैं, बजाय उस चीज के

मूल कारण को समझने के। और एक बार परीक्षा समाप्त होने के बाद, छात्र काफी हद तक विषय के बारे में अनभिज्ञ हो जाता है। कौशल, समझ और ज्ञान को बढ़ाने के साधन के रूप में शिक्षा ने अपना सार खो दिया है। भारत की शिक्षा प्रणाली में न केवल जन्मजात कौशल या बच्चे की पहचान करने के लिए एक रूपरेखा या प्रक्रियाओं का अभाव है, बल्कि यह वास्तव में इन प्रतिभाओं को अस्पष्ट और मारने के लिए भी तैयार है। यह व्यवस्था छात्रों को ऐसे विषय पढ़ने के लिए मजबूर करती है जिनमें उनकी दूर-दूर तक कोई रुचि नहीं होती। और वे उच्च अंक भी प्राप्त करते हैं

साहित्यिक समीक्षा, इस शोध पत्र में निम्न साहित्य का प्रयोग किया गया है।

लक्ष्मी मोहन, (2015) यह लेख उच्च शिक्षा के साथ कौशल समामेलन पर आधारित है। ज्ञान और कौशल को उन्नत करने के लिए उच्च शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। लोग उच्च शिक्षा में दाखिला तो लेते हैं, लेकिन उन्हें केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही मिलता है, व्यावहारिक ज्ञान नहीं। यानी उन्हें सिर्फ किताबी ज्ञान ही मिलता है। आजकल विद्यार्थी किताबी कीड़ा बन गए हैं। उनमें व्यावहारिक ज्ञान पैदा करने की कोई रुचि नहीं है। सभी व्यावसायिक संगठन व्यावहारिक ज्ञान पर चलते हैं। किसी भी क्षेत्र में ठीक से प्रदर्शन करने के लिए उच्च शिक्षा के साथ मानवीय कौशल का एकीकरण होना चाहिए। लेखक कहना चाहता है कि 19वीं सदी में व्यावहारिक ज्ञान की मांग नहीं थी। अगर लोग शिक्षित हैं और उनके पास डिग्री है तो नौकरी मिल जाती थी, लेकिन अब रुझान बदल गए हैं।

मुखोपाध्याय मरमर, (2016), यह लेख शिक्षा में कुल गुणवत्ता प्रबंधन पर आधारित है। शिक्षा भारत के प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। आजकल उच्च शिक्षा की गुणवत्ता दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। संस्थान छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों को अध्ययन के दौरान बेहतर बुनियादी सुविधाएं प्रदान नहीं करते हैं। दूसरी ओर, लागत बचाने के लिए संस्थान अयोग्य कर्मचारियों को नियुक्त करते हैं, जिसके कारण उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता को पुनः प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए सरकार को प्रत्येक शिक्षण संस्थान में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन कार्यक्रम को अनिवार्य बनाना होगा। शिक्षा की गुणवत्ता मानव की गुणवत्ता पर आधारित होती है। भारत में उच्च शिक्षा की समस्या एक गंभीर मुद्दा है और इस समस्या से निपटने के लिए सरकार को उच्च शिक्षा में दक्षता बढ़ाने के लिए उचित कदम उठाने होंगे।

गोयल एस.एल. (2017) द्वारा लिखित यह लेख भारत में माध्यमिक और उच्च शिक्षा से संबंधित मुद्दों पर आधारित है। हर साल लाखों लोग विभिन्न संस्थानों से स्नातक बनते हैं, लेकिन बदले में लोगों को बाजार में अच्छी नौकरी के अवसर नहीं मिल पाते हैं। छात्रों को ज्ञान और बेहतरीन प्लेसमेंट के अवसर प्रदान करना हर संस्थान का एकमात्र उद्देश्य है। शिक्षा की गुणवत्ता तभी बढ़ सकती है जब योग्य कर्मचारी नियुक्त किए जाएं, बेहतरीन पुस्तकालय सुविधाएं प्रदान की जाएं, गरीब और जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति की सुविधा मिले, छात्रों को किसी कंपनी में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए औद्योगिक भ्रमण की सुविधा मिले, संस्थानों को अध्ययन और चर्चा के लिए ऑडियो विजुअल रूम बनाना चाहिए। शिक्षकों को अधिक सरल तरीके से शिक्षा देने के लिए पीपीटी पर व्याख्यान देना चाहिए और छात्रों के मंच के डर को दूर करने के लिए नियमित रूप से पीपीटी प्रस्तुतीकरण लेना चाहिए।

सुरनिस, (2018) के अनुसार, यह लेख उच्च शिक्षा में गुणवत्ता वृद्धि आज के उभरते मुद्दे पर आधारित है। भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता भारत सरकार द्वारा जारी रखी जा रही खराब और पुरानी नीतियों, जाति, लिंग, धर्म आदि के मुद्दों के कारण खराब हो रही है। हर साल पूरे भारत में लाखों लोग उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन शिक्षा का स्तर तेजी से गिर रहा है। खराब पारस्परिक कौशल, खराब संचार कौशल और खराब ज्ञान आदि कई कारणों से छात्रों को उच्च अध्ययन पास करने के बाद बाजार में नौकरी नहीं मिल रही है। साक्षात्कार में उम्मीदवारों की असफलता के पीछे का कारण शिक्षा की खराब गुणवत्ता है।

एच एस व्यास, (2020) यह भारत में प्रबंधन शिक्षा के सामने आने वाली चुनौतियों पर आधारित शीर्ष बिजनेस स्कूल में मैनेजमेंट की शिक्षा लेने वाले छात्रों की संख्या बहुत अधिक है, लेकिन आंतरिक अंकों के मानदंडों के कारण शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। 25% से अधिक अंक शिक्षक के हाथ में हैं। इस वजह से कोई भी अपने पाठ्यक्रम के दौरान शिक्षकों के खिलाफ कोई शिकायत दर्ज नहीं करता है, भले ही शिक्षक मानक के अनुसार न हों।

शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य

1. सृजन में भारतीय शिक्षा की सफलता का विश्लेषण करना।
2. भारतीय शिक्षा प्रणाली में कौशल विकास के महत्व पर ध्यान केंद्रित करना।

शोध पद्धति

इस शोध पत्र की प्रकृति वर्णनात्मक है। यह छात्रों के दृष्टिकोण से भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रकृति का वर्णन करता है। नमूनाकरण तकनीक सुविधा नमूनाकरण है। लिया गया नमूना आकार 450 छात्र हैं। SPSS 21 का उपयोग किया गया है और आवृत्ति का पता लगाने के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। परिणाम और चर्चा। भारतीय शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से ऐसे रोबोट बनाने पर केंद्रित है जो सभी आदेशों को याद रखते हैं और उन्हें कुशलतापूर्वक कार्रवाई में डालते हैं। लेकिन शिक्षा का मतलब यह नहीं है। शिक्षा का मतलब वैज्ञानिक स्वभाव और प्रश्न पूछने वाले जिज्ञासु कौशल प्रदान करना है जो छात्रों के कौशल, तार्किक तर्क के साथ-साथ आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करते हैं। शैक्षणिक संस्थान मुख्य रूप से छात्रों को भविष्य के करियर के परिप्रेक्ष्य और विकास के लिए प्रशिक्षित करने के बजाय परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये परीक्षाएँ केवल छात्रों की अवधारण शक्ति और रटने की सीख पर ध्यान केंद्रित करती हैं, न कि छात्रों की वास्तविक क्षमता पर। 2014 में, शिक्षा में भारत की वैश्विक रैंकिंग 93 तक गिर गई। इसलिए भारत में शिक्षा की सुधार प्रणाली में तेजी लाने की आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के संबंध में प्रभाव और संतुष्टि पर 450 छात्रों से एक सर्वेक्षण किया गया था।

1. भारतीय शिक्षा प्रणाली कौशल विकास में मदद करती है भारतीय शिक्षा प्रणाली कौशल विकास में मदद करती है। सहमति का पैमाना आवृत्ति (उत्तरदाताओं की संख्या) प्रतिशत तीव्रता से असहमत 70 15.6 असहमत 74 16.4 तटस्थ 109 24.2 सहमत 136 30.2 तीव्रता से सहमत 61 13.6 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र

किए गए डेटा के अनुसार, 30.2% यानी 136 छात्र सहमत हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली कौशल विकास में मदद करती है और 24.2% यानी 109 छात्र इसके बारे में उदासीन हैं।

2. भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रतिबिंब (विचारों को कार्यों में डालना) की भावना पैदा करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रतिबिंब (विचारों को कार्यों में डालना) की भावना पैदा करती है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 51 11.3 असहमत 75 16.7 तटस्थ 165 36.7 सहमत 108 24.0 तीव्रता से सहमत 51 11.3 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 36.7% यानी 165 छात्र इस बात के प्रति उदासीन हैं कि भारतीय शिक्षा उनके भीतर किसी भी प्रकार का प्रतिबिंबन की भावना पैदा करती है और 24% यानी 108 छात्र इस बात से सहमत हैं कि इसने छात्रों में प्रतिबिंबन की भावना पैदा की।
3. भारतीय शिक्षा प्रणाली नेतृत्व कौशल विकसित करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली नेतृत्व कौशल विकसित करती है। आवृत्ति प्रतिशत पूरी तरह असहमत 56 12.4 असहमत 61 13.6 तटस्थ 127 28.2 सहमत 134 29.8 पूरी तरह सहमत 72 16.0 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 29.8% यानी 134 छात्र इस बात से सहमत हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली छात्रों में नेतृत्व कौशल विकसित करती है। 127 छात्र यानी 28.2% छात्र शिक्षा प्रणाली द्वारा नेतृत्व कौशल को विकसित करने के बारे में उदासीन (न तो सहमत और न ही असहमत) हैं।
4. भारतीय शिक्षा प्रणाली बेहतर संचार कौशल में सहायता करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली बेहतर संचार कौशल में सहायता करती है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 51 11.3 असहमत 58 12.9 तटस्थ 144 32.0 सहमत 116 25.8 तीव्रता से सहमत 81 18.0 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 32% यानी 144 छात्र बेहतर संचार कौशल में भारतीय शिक्षा सहायता के बारे में उदासीन हैं और 25% यानी 116 छात्र इस बात से सहमत हैं कि शिक्षा बेहतर संचार कौशल में मदद करती है।
5. भारतीय शिक्षा प्रणाली निष्पक्ष निर्णय लेने में सहायक है। भारतीय शिक्षा प्रणाली निष्पक्ष निर्णय लेने में सहायक है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 50 11.1 असहमत 65 14.4 तटस्थ 164 36.4 सहमत 112 24.9 तीव्रता से सहमत 59 13.1 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 36.4% यानी 164 छात्र इस बात के प्रति उदासीन हैं कि भारतीय शिक्षा निष्पक्ष निर्णय लेने में सहायक है और 25% यानी 112 छात्र इस बात से सहमत हैं कि शिक्षा निष्पक्ष निर्णय लेने में सहायता करती है।
6. भारतीय शिक्षा प्रणाली बेहतर निर्णय लेने के कौशल को बढ़ावा देती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली बेहतर निर्णय लेने के कौशल को बढ़ावा देती है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 53 11.8 असहमत 68 15.1 तटस्थ 149 33.1 सहमत 114 25.3 तीव्रता से सहमत 66 14.7 कुल 450 100.0 स्रोत प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 33.1% यानी 149 छात्र इस बात के प्रति उदासीन हैं कि भारतीय शिक्षा बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती है और 33% यानी 149 छात्र इस बात से सहमत हैं कि शिक्षा बेहतर निर्णय लेने में सहायता करती है।

7. भारतीय शिक्षा प्रणाली एक उद्यमी मानसिकता बनाने में मदद करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली एक उद्यमी मानसिकता बनाने में मदद करती है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 67 14.9 असहमत 131 29 तटस्थ 121 27 सहमत 66 14.7 XXI तीव्रता से सहमत 65 14.4 कुल 450 100.0 स्रोतः प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 29: यानी 131 छात्र असहमत हैं और उन्हें नहीं लगता कि भारतीय शिक्षा उद्यमशीलता की मानसिकता को बढ़ावा देने में सहायक है।
8. भारतीय शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है। आवृत्ति प्रतिशत तीव्रता से असहमत 88 19.5 असहमत 112 25 तटस्थ 81 18 सहमत 101 22.5 तीव्रता से सहमत 68 15 कुल 450 100.0 स्रोतः प्राथमिक डेटा एकत्र किए गए डेटा के अनुसार, 25% यानी 112 छात्र असहमत हैं और उन्हें नहीं लगता कि भारतीय शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान को आत्मसात करने या प्राप्त करने में मदद करती है। निष्कर्ष अध्ययन से, हमने पाया

1. छात्र भारतीय शिक्षा प्रणाली से बहुत संतुष्ट नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उदासीन हैं यानी वे निश्चित नहीं हैं कि शिक्षा कौशल विकास, बेहतर संचार कौशल या निर्णय लेने में मदद करती है या नहीं।

2. छात्र सहमत हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली बेहतर नेतृत्व क्षमता में मदद करती है।

3. दो बातें उजागर हुई कि भारतीय शिक्षा प्रणाली उद्यमी मानसिकता को बढ़ावा देने में मदद नहीं करती है

निष्कर्ष, यह भारतीय शिक्षा प्रणाली को संशोधित करने का समय है। इसे न केवल पाठ्यक्रम के संदर्भ में संशोधित किया जाना चाहिए, बल्कि छात्रों को इसे पढ़ाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षाशास्त्र को भी संशोधित किया जाना चाहिए। सैद्धांतिक ज्ञान का अपना महत्व है लेकिन व्यावहारिक प्रयोज्यता अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा प्रणाली में इन सभी खामियों के कारण, बहुत सारे भारतीय छात्र भारत से बाहर, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में अध्ययन करना पसंद करते हैं, जहाँ की शिक्षा प्रणाली उन्हें बाजार में उनकी स्थिति के लिए तैयार करती है। यह निकाला जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत से अन्य देशों में जाने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है। छात्रों की इस आउटबाउंड गतिशीलता के कई कारक हो सकते हैं, लेकिन प्रमुख बिंदुओं में से एक भारतीय शिक्षा प्रणाली है। सिफारिशें भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक मजबूत बनाने और मूल्य संवर्धन की ओर ले जाने के लिए कुछ सिफारिशें हैं विज्ञान (मेडिकल और नॉन मेडिकल), वाणिज्य और मानविकी की मुख्य धाराएँ हैं, जिनमें से एक छात्र को चुनना होता है। इन तीन कठोर धाराओं के अलावा और भी विकल्प होने चाहिए। शिक्षा एक तरह की करियर केंद्रित शिक्षा होनी चाहिए। यह ज्ञान छात्र को इस बारे में बेहतर विचार रखने में मदद करता है कि उसे नौकरी के बाजार में क्या मिलेगा। भारतीय शिक्षा प्रणाली अंकों पर अत्यधिक निर्भर है। कौशल और ज्ञान पर विचार करने के बजाय, शिक्षा प्रणाली रटने और याद करने को प्रेरित करती है। छात्र रटने के चक्र में फँस जाते हैं, जिसमें सीखना, परीक्षा देना, तैयारी करना, परीक्षा देना, सीखना शामिल है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 मोहन, एल. (2016) उच्च शिक्षा के साथ कौशल का एकीकरण। एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन बिजनेस इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट, (4), 27–37।
- 2 मुखोपाध्याय, एम. (2017) उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबंधन। SAGE प्रकाशन भारत।
- 3 गोयल, ए., और गोयल, एस. एल. (2020) मानवीय मूल्य और शिक्षा डीप एंड डीप प्रकाशन।
- 4 व्यास, एच. एस. (2018) प्रबंधन शिक्षा के सामने चुनौतियां—एक भारतीय परिप्रेक्ष्य एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 5(2), 235–239।